मॉड्यूल शीर्षक

विद्यालय वातावरण बेहतर बनाने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

National Institute of Educational Planning and Administration

NATIONAL CENTRE FOR SCHOOL LEADERSHIP
NCSL
Every Child Learns
Every School Excels

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छततीसगढ़

रायपुर – 492007

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आईएएस) संचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

डॉ योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा

उपसंचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

एवं

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

समन्वयक श्री डी.दर्शन

नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशिप अकादमी

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

माड्यूल लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

व्याख्याता जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

शीर्षक:- विद्यालय वातावरण बेहतर बनाने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

लेखक

श्री गौरव शर्मा]

व्याख्याता] डाइट कोरबा] जिला कोरबा (छ ग)

मॉड्यूल का क्षेत्र

विद्यालय नेतृत्व का विकास, छात्रों की भागीदारी का विकास ,सीखने सिखाने के वातावरण का विकास, नवाचार सृजन ।

मॉड्यूल के उद्देश्य

1) विद्यालय का वातावरण बच्चों के सामाजिक और संवेगात्मक समायोजन में सहायता करना व उनके सीखने की प्रक्रिया को प्रेरित करना ।
2) उनके स्वास्थ्य की वृद्धि एवं सुरक्षात्मक पहलू को ध्यान में रखना।

विद्यालय प्रमुख क्या सीख सकते हैं

1) विद्यालय संस्कृति क्या होती है और वह सीखने की प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करती है।
2) अपने विद्यालय में संस्कृति की पहचान शुरू करना।
3) विद्यालय में सीखने के लिए एक सकारात्मक साझा संस्कृति विकसित करने के लिए कुछ कार्य नीतियां।

प्रस्तावना:-

आदर्श विद्यालय के विषय में विचार करते समय यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि वे कौन-कौन से संकेतक हैं ,जो हमारे विद्यालयों को आकर्षक बनाते हैं। हमारे वर्तमान विद्यालय हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप क्यों नहीं है, उनके कारण क्या है ?तथा विद्यालय शिक्षा को और रुचिकर, समुदाय की आशाओं के अनुकूल, तथा गुणवत्ता परक बनाने में और क्या कुछ किया जा सकता है। शिक्षा को और अधिक प्रासंगिक ,अर्थ पूर्ण, रुचिकर तथा आनंददाई बनाने के उद्देश्य से ,इस के महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार करना आवश्यक है। जैसे पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें, अध्यापक प्रशिक्षण, शिक्षण विधाएं ,सहायक सामग्री, पर्यवेक्षण, मूल्यांकन तथा सामुदायिक सहयोग। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि विद्यालय में बच्चों को सीखने सिखाने का उपयुक्त अवसर देने के लिए किस प्रकार के वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। इनमें प्रमुख रूप से विचारणीय है ।

बच्चों को आदर्श घर जैसा ही भय रहित, स्नेहपूर्ण ,रुचिकर तथा आकर्षक वातावरण विद्यालय में किस प्रकार मिले, स्थानीय सामग्री, रोचक क्रियाओं, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, सांस्कृतिक क्रिया कलाप तथा खेलकूद के माध्यम से शिक्षा को रुचिकर कैसे बनाया जाए। प्रधानाध्यापक - अध्यापक, अध्यापक - अध्यापक, अध्यापक - बच्चों तथा अभिकर्मियों एवं समुदाय के बीच किस प्रकार का सौहार्दपूर्ण, व्यवहार गत संबंध बनाया जाए ।कक्षा में अधिगम को आसान बनाने के लिए अध्यापक - बच्चों तथा बच्चों - बच्चों में कैसा तालमेल हो ?अतः विद्यालय के भौतिक परिवेश तथा सामाजिक एवं भावनात्मक माहौल का विद्यार्थियों की पढ़ाई पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है ।विद्यालय प्रमुख होने के नाते इस पथ पर विद्यार्थियों को अग्रसर करने के लिए पहल करनी होती है। हमें चाहिए कि हम उपाय कुशल बनकर रंगारंग और प्रेरणादायक विद्यालय का निर्माण करें जिससे विद्यार्थियों के सुख प्रेरणा और उपलब्धि पर उल्लेखनीय फर्क पड़े।

चिंतन हेतु प्रश्न

1)बालकों के विकास को वातावरण कैसे प्रभावित करता है ?

2)बालक के विकास को प्रभावित करने वाले वातावरणीय कारकों पर प्रकाश डालिए ।

विद्यालय वातावरण का निर्माण भौतिक व मानवीय संसाधनों के द्वारा होता है, अतः यह सभी मिलकर वातावरण का निर्माण करने के आयाम कहलाते हैं भौतिक आयाम में विद्यालय में विभिन्न सुविधाएं व संसाधनों की उपलब्धता व अनुपलब्धता से वातावरण का निर्माण होता है व मानवीय आयाम में प्रधानाध्यापक ,अध्यापक, क्लर्क ,चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, प्रबंधन आदि का स्वभाव व व्यवहार मुख्य होता है।

आदर्श विद्यालय के विषय में विचार करते समय यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि वे कौन-कौन से संकेतक हैं ,जो हमारे विद्यालयों को आकर्षक बनाते हैं। हमारे वर्तमान विद्यालय हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप क्यों नहीं है, उनके कारण क्या है ?तथा विद्यालय शिक्षा को और रुचिकर, समुदाय की आशाओं के अनुकूल, तथा गुणवत्ता परक बनाने में और क्या कुछ किया जा सकता है। शिक्षा को और अधिक प्रासंगिक ,अर्थ पूर्ण, रुचिकर तथा आनंददाई बनाने के उद्देश्य से ,इस के महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार करना आवश्यक है। जैसे पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें, अध्यापक प्रशिक्षण, शिक्षण विधाएं ,सहायक सामग्री, पर्यवेक्षण, मूल्यांकन तथा सामुदायिक सहयोग। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि विद्यालय में बच्चों को सीखने सिखाने का उपयुक्त अवसर देने के लिए किस प्रकार के वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। इनमें प्रमुख रूप से विचारणीय है ।
बच्चों को आदर्श घर जैसा ही भय रहित, स्नेहपूर्ण ,रुचिकर तथा आकर्षक वातावरण विद्यालय में किस प्रकार मिले, स्थानीय सामग्री, रोचक क्रियाओं, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, सांस्कृतिक क्रिया कलाप तथा खेलकूद के

माध्यम से शिक्षा को रुचिकर कैसे बनाया जाए। प्रधानाध्यापक - अध्यापक, अध्यापक - अध्यापक, अध्यापक - बच्चों तथा अभिकर्मियों एवं समुदाय के बीच किस प्रकार का सौहार्दपूर्ण, व्यवहार गत संबंध बनाया जाए ।कक्षा में अधिगम को आसान बनाने के लिए अध्यापक - बच्चों तथा बच्चों - बच्चों में कैसा तालमेल हो ?अतः विद्यालय के भौतिक परिवेश तथा सामाजिक एवं भावनात्मक माहौल का विद्यार्थियों की पढ़ाई पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है ।विद्यालय प्रमुख होने के नाते इस पथ पर विद्यार्थियों को अग्रसर करने के लिए पहल करनी होती है। हमें चाहिए कि हम उपाय कुशल बनकर रंगारंग और प्रेरणादायक विद्यालय का निर्माण करें जिससे विद्यार्थियों के सुख प्रेरणा और उपलब्धि पर उल्लेखनीय फर्क पड़े।

चिंतन हेतु प्रश्न

1)बालकों के विकास को वातावरण कैसे प्रभावित करता है ?

2)बालक के विकास को प्रभावित करने वाले वातावरणीय कारकों पर प्रकाश डालिए ।

विद्यालय वातावरण का निर्माण भौतिक व मानवीय संसाधनों के द्वारा होता है, अतः यह सभी मिलकर वातावरण का निर्माण करने के आयाम कहलाते हैं भौतिक आयाम में विद्यालय में विभिन्न सुविधाएं व संसाधनों की उपलब्धता व अनुपलब्धता से वातावरण का निर्माण होता है व मानवीय आयाम में प्रधानाध्यापक ,अध्यापक, क्लर्क ,चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, प्रबंधन आदि का स्वभाव व व्यवहार मुख्य होता है

मुख्य सामग्री

विद्यालयों में पठन-पाठन तथा छात्रों के सम्यक विकास हेतु उपयुक्त वातावरण का निर्माण करने की दृष्टि से निम्नांकित पक्ष महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य पूर्ण शिक्षण :-

भाषा गणित इतिहास भूगोल अंग्रेजी आदि का शिक्षण करते समय उद्देश्य के अनुरूप शिक्षण विधि अपनाने से ज्ञानार्जन के साथ-साथ, देश की माटी और अपने पूर्वजों के जीवन चरित्र का बोध कराने से, अपनत्व का भाव पनपेगा। अतः शिक्षण, उद्देश्यपरक बनाया जाए। यथा विज्ञान पढ़ाते समय होमी जहांगीर भाभा ,जगदीश चंद्र बोस तथा गणित पढ़ाते समय महान गणितज्ञ रामानुजन, नार्लीकर एवं व्याकरण पढ़ाते समय पाडिनी जैसे भारतीय महापुरुषों का उल्लेख निश्चित रूप से विषय के अनुसार किया जाए तो छात्रों को गौरव की अनुभूति होगी।

शिक्षण विधियां

विषय को सरस तथा सहज बनाने की विधि का पालन करते हुए क्रिया आधारित अधिगम स्थितियों का निर्माण करें जिससे आनंद, उत्साह, तन्मयता ,जिज्ञासा के भाव पनपे। अपने शिक्षण के साथ-साथ बच्चों को प्रति प्रश्न

करने के लिए प्रेरित करें, इससे बच्चों में क्रियाशीलता के साथ ,भाव व्यक्त करने की क्षमता ,उचित अनुचित, योग्य अयोग्य, निर्णय लेने की क्षमता और वैचारिक विवेचना के कौशल विकसित होंगे।

विभिन्न प्रकोष्ठ का निर्माण

प्रिंट समृद्धि वातावरण :-

प्रिंट समृद्धि परिवेश अधिगम में सहायक सामग्री की तरह कार्य करता है एवं बच्चों की समझ को शब्दों और वाक्यांशों की रचना के संबंध में विस्तार देता है। उनमें अभिव्यक्ति, रचनात्मकता सृजनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को प्रोत्साहन देता है ।बच्चों में भाषा, ज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करता है जिससे वह सक्रिय होकर भाषा सीखते हैं ।कोरबा जिले के कई सक्रिय शिक्षक शिक्षिकाएं

अपने विद्यालयों में प्रिंट समृद्ध परिवेश अपनाकर शिक्षण विधि में चार चांद लगा रहे हैं, एवं बच्चों की दक्षता को निखारने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं ।

चार चांद लगा रहे हैं, एवं बच्चों की दक्षता को निखारने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं ।

ऑक्सीजोन परिवेश :-

स्वच्छ और उत्कृष्ट विद्यालय के विचार से प्रत्येक विद्यालय में ऑक्सीजोन का विकास किया जाना चाहिए, जिसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है ।इसके अंतर्गत फलदार ,फूलदार एवं औषधीय पौधों का रोपण किया जा सकता है ।

सहेली कक्ष :-

बालिका शिक्षा प्रोत्साहन और बालिकाओं के माहवारी के समय होने वाली समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विद्यालय में सहेली कक्ष होना अनिवार्य है। सहेली कक्ष में सनेटरी पैड वेंडिंग मशीन तथा आराम करने के लिए एक बेड, इंडक्शन कुकर, शक्कर, चाय पत्ती, चोकलेट, पानी एवं फ़स्टएड बॉक्स के उपलबध्ता कराई जा सकती है। सहेली कक्ष के आन्तरिक संचालन की व्यवस्था बालिका सदस्यों द्वारा की जा सकती है। सनेटरी पैड के डिस्पोजल के लिए डिस्पोजल मशीन लगाई जानी चाहिए। स्कूल में बालिका स्वक्षता एवं स्वास्थ्य जागरूकता के लिए समय समय पर कार्यशाला का आयोजन भी किया जा सकता है और इसी के अंतगर्त माता उन्मुखीकरण कार्यक्रम भी आयोजित किया जा सकता है

खेल या योग प्रकोष्ठ

विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक संतुलन को दुरुस्त बनाए रखना आज के दौर में अत्यंत आवश्यक है। प्रतियोगिता के दौर में मानसिक तनाव को दूर करने के लिए योग व खेल सर्वोत्तम साधन है ।योगिक कसरत शरीर को स्वर्गीय ऊर्जा से भर देती है ,ताजगी देती है ,और उसे बढ़ावा देती है ।शारीरिक शिक्षा, अभ्यास के रूप में, योग का मूल उद्देश्य बच्चों और किशोरों के सामंजस्य पूर्ण विकास को बढ़ावा देता है ।नियमित अभ्यास से हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी होता है ।एक उत्कृष्ट विद्यालय की संकल्पना खेल या योग क्षेत्र के बिना अधूरी है।

आत्म सुरक्षा प्रकोष्ठ

भारत का संविधान देश के प्रत्येक नागरिक को स्वयं की रक्षा या हिफाजत का अधिकार देता है। इंडियन पीनल कोड की धारा 96 से 106 तक व्यक्ति के self-defence के अधिकार का विस्तृत विवेचन दिया गया है ।आज के समय में जहां हर समय जीवन खोने का खतरा बना हुआ है, ऐसे में खासकर बच्चियों तथा महिलाओं के साथ-साथ छात्रों को सुरक्षा की ट्रेनिंग देने की विशेष आवश्यकता है ।इस प्रकार के शिक्षा देने की व्यवस्था हर विद्यालय में होनी चाहिए।

कैरियर गाइडेंस प्रकोष्ठ

अपने लिए सही कैरियर ऑप्शन चुन पाना आसान नहीं होता है ।कई बार किसी कोर्स में एडमिशन लेने के बाद समझ में आता है कि वह कोर्स तो आपके लिए बना ही नहीं है ।ऐसी किसी भी गलती से बचने के लिए बेहतर रहेगा कि छात्रों को 12वीं के बाद करियर ऑप्शन चुनने से पहले किसी एक्सपर्ट की सलाह ले ली जाए। बच्चों को 12वीं के बाद करियर संबंधी सलाह देने से पहले उनकी रूचि पता होनी चाहिए ,क्योंकि हर बच्चा दूसरे से भिन्न होता है। उनकी रुचि और पर्सनैलिटी को देखते हुए उनके सामने कई करियर ऑप्शन चुनने की व्यवस्था यदि प्रत्येक विद्यालय के उक्त प्रकोष्ठ में की जाए, तो इससे उसे जीवन के सही रास्ते में बढ़ने में मदद मिल सकती है।

TLM प्रकोष्ठ

शून्य निवेश या कम लागत में शिक्षण सहायक सामग्री तैयार करके उन के माध्यम से बच्चों को खेल खेल में शिक्षा प्रदान किया जा सकता है। साथ ही बच्चों की रूचि के अनुसार विषय आधारित शिक्षा भी उन्हें प्रदान की जा सकती है ।इसके जरिए शिक्षण को और अधिक रुचिकर बनाया जा सकता है। इस प्रकोष्ठ की अनिवार्यता भी निसंदेह प्रत्येक विद्यालय में होनी चाहिए ।इससे ग्रामीण इलाकों में प्रतिभाओं की खोज करने ,साथ ही स्थानीय छात्र-छात्राओं में पर्यावरण संरक्षण के साथ ,वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भाव भी पैदा किया जा सकता है।

उपयुक्त भाषा का प्रयोग
शिक्षक पढ़ाते समय तथा सामान्य बोलचाल में भी शुद्ध भाषा का प्रयोग करें ।शुद्ध और उत्तम भाषा का प्रयोग बच्चों के अंदर उनकी अपनी वाणी को पुष्ट करने में सहायक होता है।

नैतिक वातावरण

नैतिक भाव का अर्थ है सृष्टि के कण-कण के प्रति अपनत्व भाव का विकास। निर्धन, उपेक्षित समाज के बंधुओं के प्रति एवं अन्य परिवारों एवं जातियों के प्रति पराया पन पाप है ,ऐसे भाव निर्मित किए जाएं ।इसके लिए निम्नलिखित कार्यक्रम अपनाना चाहिए:-

1)ग्रामीण यात्रा
उपेक्षित ग्रामों में बच्चों को ले जाया जाए जिससे उन लोगों की दयनीय स्थिति को देखकर बच्चों के ह्रदय में वेदना व सक्रिय सहयोग की भावना जागृत हो।
2) समूह गान व पर्व
इनके आयोजन से देशभक्ति एवं नैतिक मूल्यों की भावना विकसित होगी।

3)सामान्य ज्ञान यात्रा
इस यात्रा के अंतर्गत बच्चों को विभिन्न ऐतिहासिक महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का अवसर दिया जाए और सामाजिक महत्व के स्थान भी दिखाए जाएं तथा पोस्ट ऑफिस एवं स्वास्थ्य केंद्र आदि को दिखाकर उनकी कार्यविधि पर निबंध लिखवाया जाए।

https://youtu.be/VW59Ei5c5dU

सफलता की कहानी 1 :-

शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार अर्थात कबाड़ से जुगाड़ के मामले में छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले की शिक्षिका सीमा पटेल ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है ।भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान ,नई दिल्ली में आयोजित समारोह में सीमा पटेल को टीचर इनोवेशन अवार्ड (TIA) से नवाजा गया। केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक एवं केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावेडकर द्वारा उन्हें यह अवार्ड से सम्मानित किया गया । अरबिंदो सोसायटी द्वारा मानव संसाधन विकास विभाग के सहयोग से यह कार्यक्रम पूरे देश में चलाया जाता है। शैक्षणिक संस्थानों में शून्य निवेश नवाचार से संबंधित वीडियो, छायाचित्र कार्यों का विवरण ऑनलाइन भेजे जाते हैं। पूरे देश से 20लाख प्रविष्ठियां हुई। कई बार परीक्षण के बाद, 20लाख में से 63 का चुनाव किया गया ।सीमा पटेल कोरबा जिले के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला में पदस्थ है ।सीमा पटेल अपने विद्यालय और हॉस्टल से निकलने वाले हर कचरे का बखूबी इस्तेमाल करती है। विद्यालय और हॉस्टल से बड़ी मात्रा में निकलने वाले कागजों को ,सीमा पटेल छात्रों की टीम के साथ छह भागों में विभाजित करती है। फिर उन एकत्र हुए कागज के टुकड़ों को मिट्टी के साथ मिलाकर इसकी मूर्तियां, खिलौने आदि बनाती है। उन मूर्तियों व खिलौनों में छात्रों द्वारा प्रयुक्त पेंसिल के छिलकों को चिपकाकर सुंदर डिजाइन तैयार किया जाता है।

बिस्किट ,चॉकलेट, चिप्स आदि पैकेजिंग के प्लास्टिक को कटिंग कर गूंथा जाता है, और फिर उससे मैट, गुड़िया आदि आकर्षक क्राफ्ट बनाए जाते हैं ।पुराने कपड़ों को भी कटिंग कर इससे मेट आदि तैयार किया जाता है ।बोतल, कांच की चूड़ी आदि का उपयोग भी क्राफ्ट बनाने में करती है ।और हॉस्टल के किचन से निकलने वाले गीले कचरे का उपयोग खाद बनाने में भी करती है ।

सफलता की कहानी 2 :-

कोरबा जिले के विकासखंड पोड़ी उपरोड़ा के ग्राम दर्रीपारा स्थित शासकीय प्राथमिक शाला में दो दिव्यांग अध्यापक पदस्थ है ।इनमें से एक रंजीत कुमार (52)का कद केवल 3 फीट 4 इंच है। वह हेड मास्टर है ।वह ठीक तरह से खड़े भी नहीं हो पाते हैं ।चलने के लिए दोनों पैरों पर हाथों का सहारा लेना पड़ता है ।वह शरीर से दिव्यांग जरूर है लेकिन उनके इरादे हिमालय से भी ऊंचे हैं ।दूसरे शिक्षक राम कुमार देवांगन (50) जन्म से ही दृष्टिहीन है। बच्चों को ब्रेल लिपि से पढ़ाते हैं ।उनके विद्यालय में हर साल पांचवीं बोर्ड में बच्चे 80% से 90% तक अंक अर्जित करते हैं। रंजीत कुमार जब सबसे पहले गांव आए तो स्कूल की इमारत तक भी नहीं थी ।नाम मात्र के बच्चे थे पर अब यहां 66 बच्चे ज्ञानार्जन कर रहे हैं। रंजीत कुमार की ऊंचाई कम होने के कारण उन्हें पढ़ाने व ब्लॉक बोर्ड में लिखने के लिए टेबल की जरूरत पड़ती है, पर वह आसानी से यह काम कर लेते हैं ।सबसे पहले तबेले में स्कूल संचालित था ।2 साल के अथक प्रयास से शिक्षा विभाग व प्रशासन के अधिकारियों के सहयोग से स्कूल भवन पास कराया गया। धीरे-धीरे ही सही मगर शिक्षा के स्तर में अब पूरी तरह सुधार हो चुका है।

विद्यालय को आकर्षक बनाने हेतु मूल मंत्र

1. राष्ट्रीय पर्व एवं स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस के 2 दिन पूर्व कक्षावार सफाई प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए, इसके लिए पहले से ही कक्षा वार स्थान निर्धारित कर दिया जाए। सबसे अच्छी सफाई करने वाली कक्षा को राष्ट्रीय पर्व समारोह में पुरस्कृत किया जाएगा।
2. विद्यालय में कूड़ा करकट को इकट्ठा करने के लिए उपयुक्त स्थल पर एक गड्ढा खुद वाया जाए जिसमें बच्चे प्रतिदिन कूड़ा करकट एकत्र करें।
3. विद्यालय कक्षाओं में महापुरुषों के चित्र लगाए जाएं ।
4. विद्यालय कक्षा तथा अन्य उपयुक्त स्थानों पर बोध वाक्य लिखे जाए ।
5. विद्यालय की सुरक्षा और रमणीयता के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय परिसर को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जाए जिससे उसकी अलग पहचान बन सके इसके लिए विद्यालय परिसर को सीमा बंद किया जा सकता है।
6. विद्यालय परिवार के सहयोग से ईटों की चारदीवारी का निर्माण कराया जा सकता है।
7. छात्रों में बागवानी, कृषि तथा वृक्षारोपण की भावना विकसित करने एवं श्रम के प्रति निष्ठा और श्रमिकों के प्रति आदर पैदा करने के लिए परिसर में बच्चों से क्यारियां बनवाई जाए। छात्रों को विद्यालय परिवार के माध्यम से फूल पौधे उपलब्ध कराए जाएं ।आवंटित क्यारियों को निराने सीखने तथा सुरक्षा आदि का कार्य निर्धारित कक्षा द्वारा ही किया जाएगा। सर्वोत्तम क्यारी वाली कक्षा को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाए ।
8. विद्यालय परिसर को स्वच्छ और आकर्षक बनाने के लिए बच्चों को विद्यालय में गमला बनाना सिखाया जाए। इन गमलों पर बच्चों के नाम लिखे जाए। संबंधित बच्चा ही अपने गमले तथा पौधे की देखभाल करें ।विद्यालय परिवार में एकएक सदस्य से आग्रह पूर्वक एक पेड़ अपनी योजना अनुसार परिसर में रोपित - कराया जाए और उनके पालन पोषण का दायित्व भी उन्हीं पर डाला जाए।
9. विद्यालय में शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने तथा समाज में अध्यापकों को उचित सम्मान दिलाने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय में आवश्यकतानुसार कुर्सी और मेज की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।
10. विद्यालय में प्रति सप्ताह 1 दिन खेलकूद और साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन अनिवार्य रूप से होना चाहिए और प्रत्येक माह अंतः कक्षीय प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए।
11. बच्चों में अनुशासन की भावना जागृत करने के लिए उन्हें विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि में पंक्ति बंद होकर चलने, मार्च पास्ट करने, कक्षाओं में जाने तथा विद्यालय से बाहर जाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
12. विद्यालय में सुरम्य वातावरण का सृजन करने के लिए समय पालन का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है समय पालन ,अनुशासन ,नियमित उपस्थिति आदि के लिए भी छात्रों को वर्ष की समाप्ति पर प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान प्रमाण पत्र दिया जाना चाहिए।

GOVT. SR. SEC. SCHOOL, AJABPUR

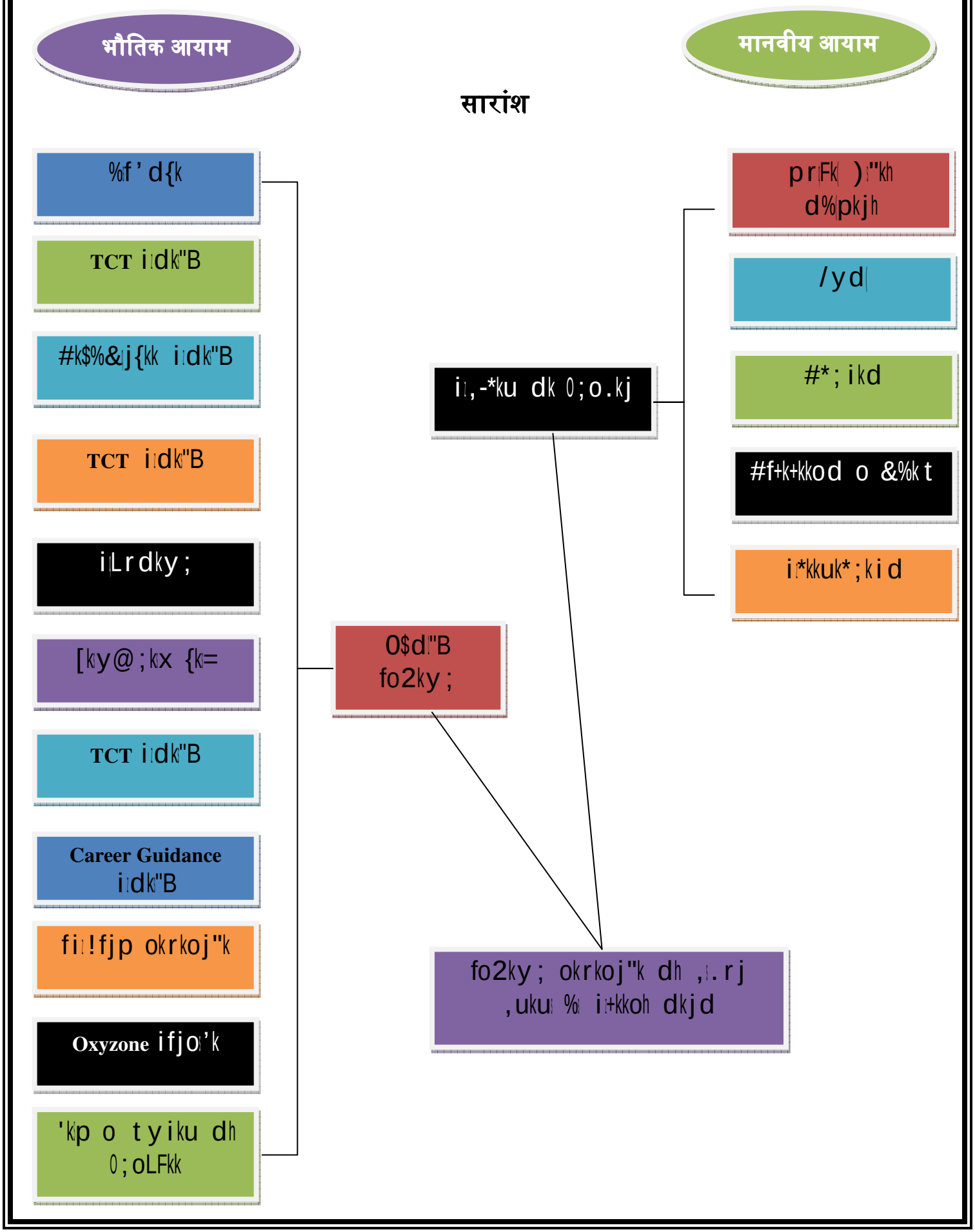

सारांश

भौतिक आयाम
मानवीय आयाम
%f'kd{k
TCT i:dk"B
#k$%&j{kk i:dk"B
TCT i:dk"B
iLrdky;
[ky@;kx {k=
TCT i:dk"B
Career Guidance i:dk"B
fi!fjp okrkoj"k
Oxyzone ifjo'k
'kp o tyiku dh 0;oLFkk
0$d"B fo2ky;
i,-*ku dk 0;o.kj
prFk)"kh d%pkjh
/yd
#*;ikd
#f+k+kkod o &%kt
i*kkuk*;kid
fo2ky; okrkoj"k dh ,.rj ,uku % i+kkoh dkjd

स्रोत संदर्भ

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

6. प्रारंभिक शिक्षा दिशाएं और संभावनाएं, जगमोहन सिंह, राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद, राजकीय सेंट्रल पेडगॉजिकल इंस्टीट्यूट

7. गूगल सर्च